P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-4* (Part-1) December- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

# फिरोजाबाद जनपद के ग्रामीण एवं शहरी परिषदीय विद्यालयों के विद्यार्थियों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन

**गीता यादव**
असिस्टेंट प्रोफेसर,
शिक्षा संकाय,
ए. के. (पी0 जी0) कालेज,
शिकोहाबाद

**सारांश**

शिक्षा के द्वारा जहॉ एक ओर बालक की अन्तर्निहित शक्तियों का विकास होता है वही समायोजन क्षमता का विकास भी करती है। वर्तमान समय में परिषदीय विद्यालयों की शिक्षा में गुणात्मकता लाने के लिए एवं बालकों को विद्यालयों में शिक्षण हेतु रुकने के लिए विद्यालय की क्रियाओं एवं वतावरण में इस प्रकार परिवर्तन किया जाय कि विद्यार्थी अपने आपको प्रशन्नतापूर्वक समायोजित कर सके। प्रस्तुत शोध में ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के परिषदीय विद्यालयों के विद्यार्थियों के समायोजन का अध्ययन किया गया है। जिसमें समायोजन के तीन आयामों 1. सांवेगिक 2. सामाजिक 3. शैक्षिक को लिया गया है। शोध अध्ययन में शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों का शैक्षिक समायोजन ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की अपेक्षा बेहतर पाया गया। जबकि सांवेगिक एवं सामाजिक समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। क्षेत्र के आधार पर छात्रों के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया जबकि शहरी क्षेत्र की छात्राओं का सामाजिक एवं शैक्षिक समायोजन ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं की अपेक्षा बेहतर पाया गया। परन्तु सांवेगिक समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

**मुख्य शब्द** : ग्रामीण एवं शहरी परिषदीय विद्यालयों

**प्रस्तावना**

शिक्षा किसी भी राष्ट्र की समाजिक आर्थिक राजनैतिक तथा राष्ट्रीय प्रगति के लिए एक महत्वपूर्ण औजार है। नन्हें बालक जिनमें भविष्य की संभावनाओं को देखा जाता है। शिक्षा का मजबूत आधार प्रदान करके ही राष्ट्र के इस भविष्य के स्वरुप को उन्नत एवं सफल बनाया जा सकता है और तभी एक राष्ट्र अपने अभीष्ट लक्ष्य तक पहुॅच सकता है। शिक्षा व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यक्तित्व को प्रभावित करती है चाहे उसका राष्ट्रीय दृष्टिकोण हो, सामाजिक दृष्टिकोण हो, चरित्र निर्माण हो, मूल्यों का विकास हो या फिर समायोजन क्षमताओं का विकास हो ।भारत की स्वतंत्रता के पश्चात संविधान के अनुच्छेद– 45 में संविधान लागू किए जाने के समय से आगामी 10 वर्षो के अन्तर्गत 14 वर्ष तक के बच्चों के लिए निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा प्रदान करने का प्रावधान रखा गया। और यह समयअवधि उत्तरोत्तर आगे की ओर बढती रही। परन्तु आज तक चाहे कारण जनसंख्या वृद्धि हो या आर्थिक कारण हो या आभिभावकों का जागरूक न होना या उनकी कोई रूढ़िवादिता, मजबूरी हो, राष्ट्र साक्षरता के 100 प्रतिशत लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सका है।

शिक्षा सर्वांगीण विकास का आधार है। व्यक्ति के व्यक्तित्व के प्रत्येक पहलू को श्रेष्ठता के शिखर तक पहुचाने में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका है। जहां व्यक्ति एक सामाजिक प्राणी है और वह जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त अपने आन्तरिक मानसिक एवं वाह्य भौतिक दोनो ही वातावरणों के साथ समायोजन करता रहता है। यह समायोजन परिवार, विद्यालय, समाज से प्रारम्भ होकर व्यवसाय तक और व्यवसाय के पश्चात अर्थात सेवानिवृत्ति के बाद भी इसकी प्रक्रिया जारी रहती है। व्यक्ति या समूह की यह स्वाभाविक प्रवृति रही है कि वह संघर्ष पसन्द नहीं करते और इसी संघर्ष की स्थिति को टालकर सकारात्मक दिशा में आत्म सन्तुष्टि के साथ आगे की ओर अग्रसर होना ही समायोजन है। अन्यथा की स्थिति मे व्यक्ति अपने आपको असमायोजित महसूस करता है। इस प्रकार के असमायोजित व्यक्ति में कुंठा, तनाव, चिन्ता जैसे मानसिक विकार उत्पन्न हो जाते हैं और मानसिक रूप से पीड़ित व्यक्ति कभी श्रेष्ठ एवं स्वस्थ परम्पराओं वाले समाज की कड़ी नहीं बन सकता है। वल्कि सामाजिक विकृतियों

को उत्पन्न करने का भागी बन जाता है।सामाजिक व्यवस्थओं में सन्तुलन बनाए रखने में समायोजन महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में व्यक्ति के सम्मुख विभिन्न प्रकार की परिस्थितियां उत्पन्न होती हैं। इन्ही परिस्थतियों पर नियंत्रण करने, उनका सामना करने, उनके अनुकूल आचरण करने एवं उस पर्यावरण एवं परिस्थिति से लाभ उठाने के लिए समायोजन आवश्यक है। इस प्रकार समायोजन वर्तमान समाज का एक अनिवार्य तत्व है।

**अध्ययन की आवश्यकता**

शोधकर्ती ने प्राथमिक विद्यालयों के सर्वेक्षण में देखा कि विद्यालय में अनेक ऐसे छात्र हैं जिनका नामांकन शिक्षण के लिये विद्यालय में होता है और वह शिक्षा के लिये विद्यालय में आते भी हैं, लेकिन उनकी उपस्थिति में निरन्तरता का अभाव रहता है या कुछ छात्र मध्यावकाश में कुछ न कुछ गृह कार्य बताकर विद्यालय छोड़कर चले जाते हैं तभी शोधकर्ती को यह जिज्ञासा उत्पन्न हुयी कि विद्यालयी परिस्थितियों के साथ ये विद्यार्थी उचित समायोजन स्थापित कर पाने में अपने आपको किसी सीमा तक सक्षम महसूस करते है एवं क्षेत्रीय स्थितियां परिवर्तित होने पर विद्यार्थियों के समायोजन पर क्या प्रभाव पड़ता है। ताकि समायोजन के विभिन्न आयामों के प्रभाव को समझकर तथा इनको प्रभावित करने वाले कारकों में परिवर्तन करके विद्यार्थियों को विद्यालयों में समायोजित होने के लिए विकल्प के रुप में एक विस्तृत एवं सकारात्मक वातावरण प्रदान किया जा सके।

**अध्ययन के उद्देश्य**

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के परिषदीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के सामवेगिक, सामजिक एवं शैक्षिक समायोजन के बारे में जानकारी प्राप्त करना।

**परिकल्पनाऐं**

1. ग्रामीण एवं शहरी परिषदीय विद्यालयों के विद्यार्थियों के सांवेगिक, सामाजिक एवं शैक्षिक समायोजन में कोई अन्तर नहीं है।
2. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के परिषदीय विद्यालयों के छात्रों के सांवेगिक, सामाजिक एवं शैक्षिक समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के परिषदीय विद्यालयों की छात्राओं के सांवेगिक, सामाजिक एवं शैक्षिक समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

**पदों की परिभाषा**

1. ग्रामीण परिषदीय विद्यालय के विद्यार्थी – ऐसे विद्यार्थी जो बेसिक शिक्षा परिषद द्वारा संचालित ग्रामीण अंचल के परिषदीय प्रा0 विद्यालयों में अध्ययनरत है।
2. शहरी परिषदीय विद्यालय के विद्यार्थी – ऐसे विद्यार्थी जो बेसिक शिक्षा परिषद द्वारा संचालित शहरी अंचल के परिषदीय प्रा0 विद्यालयों में अध्ययनरत है।

**समायोजन**

समायोजन से हमारा तात्पर्य उस सामाजिक प्रक्रिया से है, जिसके द्वारा बालक विद्यालयी परिवेश में अधिगम प्राप्ति हेतु उच्च सामंजस्य स्थापित करने के लिए अपने व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तन लाए। यह परिवर्तन विद्यालय की सुविधाओं एवं परिस्थितियों पर निर्भर करता है। गेट्स व अन्य '' समायोजन निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है। जिसके द्वारा व्यक्ति अपने और अपने वातावरण के बीच संतुलित सम्बन्ध बनाये रखने के लिए व्यवहार में परिवर्तन करता है।''

**अध्ययन शोध विधि**

अध्ययनकर्ता ने शोध के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है।

**अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण**

समायोजन के अध्ययन के लिए सिन्हा और सिंह द्वारा निर्मित एडजस्टमेन्ट इन्वेन्टरी फॉर द स्कूल स्टूडेन्ट का प्रयोग किया गया उपकरण की विश्वसनीयता 95 तथा वैद्धता द्विपंक्ति सह सम्बन्ध विधि द्वारा ज्ञात की गयी है।

**अध्ययन की सीमाऐं**

1. सम्बन्धित शोध में शोधकर्ता ने जनपद फिरोजाबाद के 5 ग्रामीण एवं 5 शहरी क्षेत्र के परिषदीय प्राथमिक विद्यालयों का चयन किया है।
2. शोध में कक्षा 3 से 5 तक के विद्यार्थियों को ही सम्मलित किया गया है।
3. सोद्देश्यपूर्ण विधि द्वारा ग्रामीण परिषदीय प्राथमिक विद्यालयों से 100 छात्रों एवं शहरी क्षेत्र के परिषदीय प्राथमिक विद्यालयों से 100 विद्यार्थी अध्ययन हेतु चुने गये हैं।

**तालिका –1**

**ग्रामीण एवं शहरी आधार पर विद्यार्थियों के समायोजन का विवरण**

| समायोजन आयाम | ग्रामीण | | | शहरी | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | संख्या | मध्यमान | मानक विचलन | संख्या | मध्यमान | मानक विचलन | टी मान |
| सांवेगिक | 100 | 9.49 | 4.03 | 100 | 10.4 | 3.02 | 1.80 |
| सामाजिक | 100 | 11.02 | 2.58 | 100 | 12.5 | 2.01 | 1.79 |
| शैक्षिक | 100 | 10.8 | 2.40 | 100 | 12.20 | 2.2 | 6.30 |

तलिका –1 से स्पष्ट होता है कि क्षेत्रीय आधार पर ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के सांवेगिक एवं सामाजिक समायोजन के टी मान .01 व .05 सार्थकता स्तर के मान से कम प्राप्त हुआ है। जबकि शैक्षिक समायोजन का टी मान सार्थकता स्तर के मान से बहुत अधिक है। अतः समायोजन के शैक्षिक आयाम में ही सार्थक अन्तर प्राप्त हुआ है।

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-4* (Part-1) December- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

तालिका 2
ग्रामीण एवं शहरी छात्रों के समायोजन का विवरण

| समायोजन आयाम | ग्रामीण छात्र | | | शहरी छात्र | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | संख्या | मध्यमान | मानक विचलन | संख्या | मध्यमान | मानक विचलन | टी मान |
| सांवेगिक | 50 | 7.45 | 3.01 | 50 | 8.04 | 2.91 | 1.73 |
| सामाजिक | 50 | 9.41 | 2.01 | 50 | 10.20 | 2.25 | 1.88 |
| शैक्षिक | 50 | 11.50 | 3.040 | 50 | 12.40 | 3.05 | 1.5 |

तालिका 2– को देखने से स्पष्ट होता है कि ग्रामीण एवं शहरी परिषदीय प्राथमिक विद्यालयों के छात्रों के तीनो सांवेगिक सामाजिक एवं शैक्षिक समायोजन के टी मान 0.01 स्तर के मान से कम है। अतः क्षेत्रीय आधार पर छात्रों के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

तालिका 3 – ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं के समायोजन का विवरण

| समायोजन आयाम | ग्रामीण छात्रायें | | | शहरी छात्रायें | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | संख्या | मध्यमान | मानक विचलन | संख्या | मध्यमान | मानक विचलन | टी मान |
| सांवेगिक | 50 | 6.20 | 2.2 | 50 | 6.8 | 2.1 | 1.36 |
| सामाजिक | 50 | 7.24 | 3.6 | 50 | 9.14 | 2.3 | 3.125 |
| शैक्षिक | 50 | 6.84 | 2.8 | 50 | 9.92 | 3.1 | 5.2 |

तालिका 3– को देखने से स्पष्ट होता है कि ग्रामीण एवं शहरी परिषदीय प्राथमिक विद्यालयों की छात्राओं के सांवेगिक समायोजन का टी मान 0.01 स्तर के मान से कम है। जबकि सामाजिक एवं शैक्षिक समायोजन के टी मान 0.01 व .05 सार्थकता स्तर के मान से अधिक है। अतः क्षेत्रीय आधार पर छात्राओं के सांवेगिक समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। जबकि समाजिक एवं शैक्षिक समायोजन स्पष्ट अन्तर प्राप्त हुआ है।

**अध्ययन के निष्कर्ष**

1. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के परिषदीय विद्यालयों के विद्यार्थियों के सांवेगिक एवं सामाजिक समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। जबकि क्षेत्र के आधार पर विद्यार्थियों (छात्र व छात्रायें) के शैक्षिक समायोजन में सार्थक अन्तर पाया गया है।
2. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र परिषदीय विद्यालयों के छात्रों के सांवेगिक एवं शैक्षिक समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है।
3. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के परिषदीय विद्यालयों की छात्राओं के सांवेगिक समायोजन के कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया, परन्तु सामाजिक एवं शैक्षिक समायोजन में सार्थक अन्तर दिखाई पड़ता है। शहरी क्षेत्र की छात्रायें शैक्षिक एवं सामाजिक रूप से अपने सहपाठियों, शिक्षकों एव विद्यालयी वातावरण के साथ अपेक्षाकृत बेहतर रूप से समायोजित है।

विद्यार्थियों के विद्यालय में समायोजन में मुख्य रूप से क्षेत्र के आधार पर छात्राओं के शैक्षिक एवं सामाजिक समायोजन में जो अन्तर पाया गया है, वह उन्हें प्राप्त होने वाली सुविधाओं, रूढ़ियों, माता पिता का बालिका शिक्षा पर ध्यान न देना गृह कार्यों में हाथ बटाना, बालिकाओं का अन्य कार्यों में व्यस्त हो जाना इत्यादि कई कारण हो सकते हैं। जो शहरी एवं ग्रामीण परिवेश में भिन्न रूप में देखने को मिलते हैं। क्षेत्रीय परिवेश बदलने पर अभिवावकों के दृष्टिकोण उनकी जागरुकता तथा छात्र छात्राओं की शिक्षा के प्रति समाजिक नजरिए में जो अन्तर स्वतंत्रता के 70 वर्षों के विकास के बावजूद भी समाप्त नहीं हो पाया है। इसी का प्रभाव विद्यार्थियों के समायोजन में प्राप्त अन्तर का कारण हो सकता है। शिक्षक विद्यालय के वातावरण की आकर्षक एवं विभिन्न शिक्षण सम्बन्धी क्रियाओं को सम्मिलित करके तथा माता–पिता के साथ वार्ता करके छात्र –छात्राओं की शारीरिक, शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं से जागरुक करके विद्यालय के वातवरण में विद्यार्थियों को समायोजन स्थापित करने में अभिवावकों की सहभागिता को भी सुनिश्चित किया जा सकता है।

**सन्दर्भ ग्रंथ सूची**

1. *अंशु सिंघल– 1997 –पारिवारिक सम्बन्धों का छात्र–छात्राओं की बुद्धि एवं शैक्षिक विकास पर प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन*
2. *अग्रवाल के एल 1986– ए स्टडी ऑफ द इफेक्ट ऑफ पेरेण्टल इनकरेजमेण्ट अपोन द एजूकेशनल डेवलपमेण्ट ऑफ स्टूडेण्ट संदर्भित एम0 बी0 बुच (सम्पादक) द फोर्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन नई दिल्ली एन0 सी0 ई0 आर0 टी0 पृष्ठ संख्या– 332*
3. *कपिल एच0 के0 – सांख्यकी के मूल तत्व आगरा विनोद पुस्तक मन्दिर*
4. *भारतीय आधुनिक शिक्षा जुलाई 2000एन0सी0ई0आर0टी0 की त्रैमासिक पत्रिका*
5. *जयसवाल, सीताराम– (1975) समायोजन मनोविज्ञान,उ0प्र0 हिन्दी ग्रन्थ अकादमी लखनऊ*
6. *मालवीय डा0 राजीव,( 2008)शिक्षा और समाज, शारदा पुस्तक भवन, इलाहबाद*

7. *रजत कुमार सिंह 2017 – कस्तूरबा गॉधी आवासीय बालिका विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक आकांक्षा स्तर एवं समायोजन का अध्ययन*
8. *Arul Sekar (2015) Emotional, Social, Educational Adjustment of Higher Secondary School Students In Relation To Academic Achievement.*
9. *Madhu Gupta &Dimpal Mehtani (2017) Adjustment among Secondary School Student: A Comparative Study on The Basis of Academic Achievement and Gender.*
10. *hi.m.wikipedia*
11. *www.academia.edu*
12. *www.educationforallindia.com*